सतगुरु प्यारे हमारे साईं ब्रह्मस्वरूप

स्थाई :- सतगुरु प्यारे हमारे साईं ब्रह्मस्वरूप
ये तो योगी और ज्ञानी बापू ईश्वर का रूप

अन्तरा:-

1) ये तो रहमत है इनकी मानव देह में जो आए,
क्या तो स्वार्थ है इनका घर-घर आकर जगायें,
बापू चाहते सब जाने अपना निज स्वरुप ,ये तो योगी ----

2) दुर्गुण दूर हटाते, हमको अमृत पिलाते,
अपना सब कुछ लुटाते, हमको उपर उठाते,
कष्ट उठाते हमारे लिए कैसे अवधूत ,ये तो योगी ----

3) सतगुरु इष्ट हमारे हमको प्राणों से प्यारे ,
हम हैं चरणों की धूलि ये हैं चंदन हमारे,
जग में रहते हैं ऐसे जैसे पानी में फूल,ये तो योगी ---

4) इनको कह लो गुरूजी चाहे कहलो प्रभुजी,
चाहे स्वामी जी कह लो अंतर्यामी जी कह लो,
सारे भक्तों के दिल में बापू नारायण रूप ,ये तो योगी --

5) सबको उपर उठाना गुरू का शौक निराला,
भक्ति ज्ञान बढ़ाकर करते दिल में उजाला,
सबके दिल में बैठे हैं बापू ज्योतिस्वरूप,ये तो योगी----

6) इनके रूप अनेक सब में ब्रह्म है एक ,
इनकी लीला है भिन्न सबमें चेतन अभिन्न,
दिल में रहते हैं ऐसे जैसे माला में फूल,ये तो योगी---

सतगुरु प्यारे हमारे ----------
ये तो योगी ----------